

CLASS IX

HINDI

खुशबू रचते हैं हाथ





अरुण कमल (जन्म-15 फरवरी, 1954) आधुनिक हिन्दी साहित्य में समकालीन दौर के प्रगतिशील विचारधारा संपन्न, सहज शैली के प्रख्यात कवि हैं। साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त इस कवि ने कविता के अतिरिक्त आलोचना भी लिखी हैं, अनुवाद कार्य भी किये हैं तथा लंबे समय तक सुप्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका आलोचना का संपादन भी किया है।

नई गलियों के बीच कई नालों के पार
कूड़े करकट के ढेरों के बाद
बदबू से फटते जाते इस
टोले के अंदर खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथों!

अगरबत्ती का इस्तेमाल लगभग हर व्यक्ति करता है। अगरबत्ती हालाँकि पूजा पाठ में इस्तेमाल होती है लेकिन इसकी खुशबू ही शायद वह वजह होती है कि लोग इसे प्रतिदिन इस्तेमाल करते हैं। इस कविता में कवि ने उन खुशबूदार अगरबत्ती बनाने वालों के यथार्थ के बारे में बताया है जो खुशबू से कोसों दूर हैं। अगरबत्ती का कारखाना अकसर किसी तंग गली में, नालों के पार और बजबजाते कूड़े के ढेर के समीन होता है। ऐसे स्थानों पर कई कारीगर अपने हाथों से अगरबत्ती को मूर्त रूप देते हैं।

उभरी नसोंवाले हाथ घिसे नाखूनोंवाले हाथ
पीपल के पत्ते से नए नए हाथे जूही की डाल से खुशबूदार
हाथ गंदे कटे पिटे हाथजख्म से फटे हुए हाथ

खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ!

अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ किस्म किस्म के होते हैं। किसी के हाथों में उभरी हुई नसें होती हैं। किसी के हाथों के नाखून घिसे हुए होते हैं। कुछ बच्चे भी काम करते हैं जिनके हाथ पीपल के नये पत्तों की तरह कोमल होते हैं। कुछ कम उम्र की लड़कियाँ भी होती हैं जिनके हाथ जूही की डाल की तरह होते हैं। कुछ कारीगरों के हाथ गंदे, कटे-पिटे और जख्म से फटे हुए भी होते हैं।

यहीं इस गली में बनती हैं मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ
इन्हीं गंदे मुहल्लों के गंदे लोग बनाते हैं केवड़ा गुलाब खस और
रातरानी अगरबत्तियाँ दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी खुशबू रचते रहते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।

इसी तंग गली में पूरे देश की मशहूर अगरबत्तियाँ बनती हैं। उस
गंदे मुहल्ले के गंदे लोग (गरीब लोग) ही केवड़ा, गुलाब, खस और
रातरानी के खुशबू वाली अगरबत्तियाँ बनाते हैं। यह एक विडंबना
ही है कि दुनिया की सारी खुशबू उन गलियों में बनती है जहाँ
दुनिया भर की गंदगी समाई होती है।

